कविता एक बहुआयामी विन्यास

प्रेमलता जैन

मेरी नजर में कविता एक बहुआयामी विन्यास है। कविता की मूल वस्तु और शिल्प, शब्द कौशल, समाज और व्यक्ति के अनुभवों से संबंधित ग्राह्यता मूलतः कवि की कवित्व शक्ति का उद्घोष है जबकि कविता से उठने वाले सौन्दर्य के अनेक स्तर, अर्थ-छायाएं, इतिहास और वर्तमान का अतिक्रमण करके उसे कालमुक्त और भविष्योन्मुख सिद्ध करने का दायित्व कविता की प्रवृति पर निर्भर होने के बावजूद पाठक की ग्राह्य-शक्ति पर भी अवलंबित होता है।

कवि के पक्ष के लिए गालिब का शेर बड़ा मौजू है....

है और भी दुनिया में सुखन वर बहुत अच्छे
कहते हैं कि ग़ालिब का है अंदाजे-बयां और

सैंकड़ो कवि छायावाद के दौर या उसके बाद के दौर में कवि होने की जद्दोजहद में थे। कितने छट गए। छायावाद के चार ही सिरमौर रहे। चारों की विषयवस्तु अनेक बार समान है किंतु कहने का ढंग अलग-अलग है। अपने अंदाजे-बयां से पहचाने जाते हैं।

कविता के ग्राहक अथवा पाठकों की ग्राह्यता के लिए भी गालिब याद आते हैं-

कुछ तो लाल-ओ-जवाहर में नुमाया हो गई।
खाक़ में क्या सूरते होंगी जो पिनहां हो गई।।

कुछ तो कविता बयान करती है- बहुत कुछ प्रबुद्ध सहृदय पाठक की जौहरी वाली दृष्टि और अनुभव कविता रूपी रत्नों को पॉलिश करता है। पाठक या कविता के आलोचक के दम की बात है कि अच्छी कविता की पहचान प्रकट-शिल्प से तो करता ही है शब्द के गठन, शब्दों के पीछे-बहुत पीछे यानि इतिहास से भी पहले और भविष्य की ओर कविता के अर्थ को ले जाता है। आलोचक की दृष्टि, जो उसके अपने भाव-गांभीर्य, संवेदनशीलता ज्ञान-विज्ञान में पैठ पर निर्भर करती है। आलोचक के आधुनिक बोध का ही परिणाम है कि निराला की अनेक रचनाओं को पूर्व में बहिष्कार का सामना करने पर परवर्ती आलोचना जगत में प्रसिद्धि मिली- जूही भी कली, सरोज स्मृति ऐसी ही रचनाएं हैं।

तुलसी के मानस में कवि के पक्ष में कविता का सौन्दर्य- ''गिराअरथ जलविचि सम कहियत भिन्न न भिन्न है, किन्तु पाठक के संदर्भ में- ''जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरति देखी तिन तैसी।'' यानि- कविता की शाश्वतता, सार्वजनीनता, सार्वभौमिकता कवि और पाठक-आलोचक की समान निर्वहण-क्षमता पर टिकी है। इस बात को इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि कवि की अन्तःचेतना में व्याप्त सौन्दर्य कविता में शाब्दिक जामा ही पहनता है, आलोचक की अन्तःचेतना में व्याप्त सौन्दर्य ही कविताओं को शब्दों से आगे जाकर कवि को अभिप्सित सौन्दर्य को उघाड़ने की सामर्थ्य रखता है। आलोचक अनेक बार कविता रूपी नाव के कवि की चाहन से भी आगे ले जाकर समुद्र-भ्रमण कराता है। ''पाढलौ नेरुदा टी॰ एस॰ इलियट के लिए कहते थे कि ''मैं अपने ऐसे पाठक को खोना नहीं चाहता जो मेरी कविता की झुर्रियों तक को जानता है।''

* एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी, अरविंदो कॉलेज, दिल्ली